दिवाकर चित्रकथा

तृष्णा का जाल

प्राकृत भारती अकादमी

अंक ३०
मूल्य १७.००

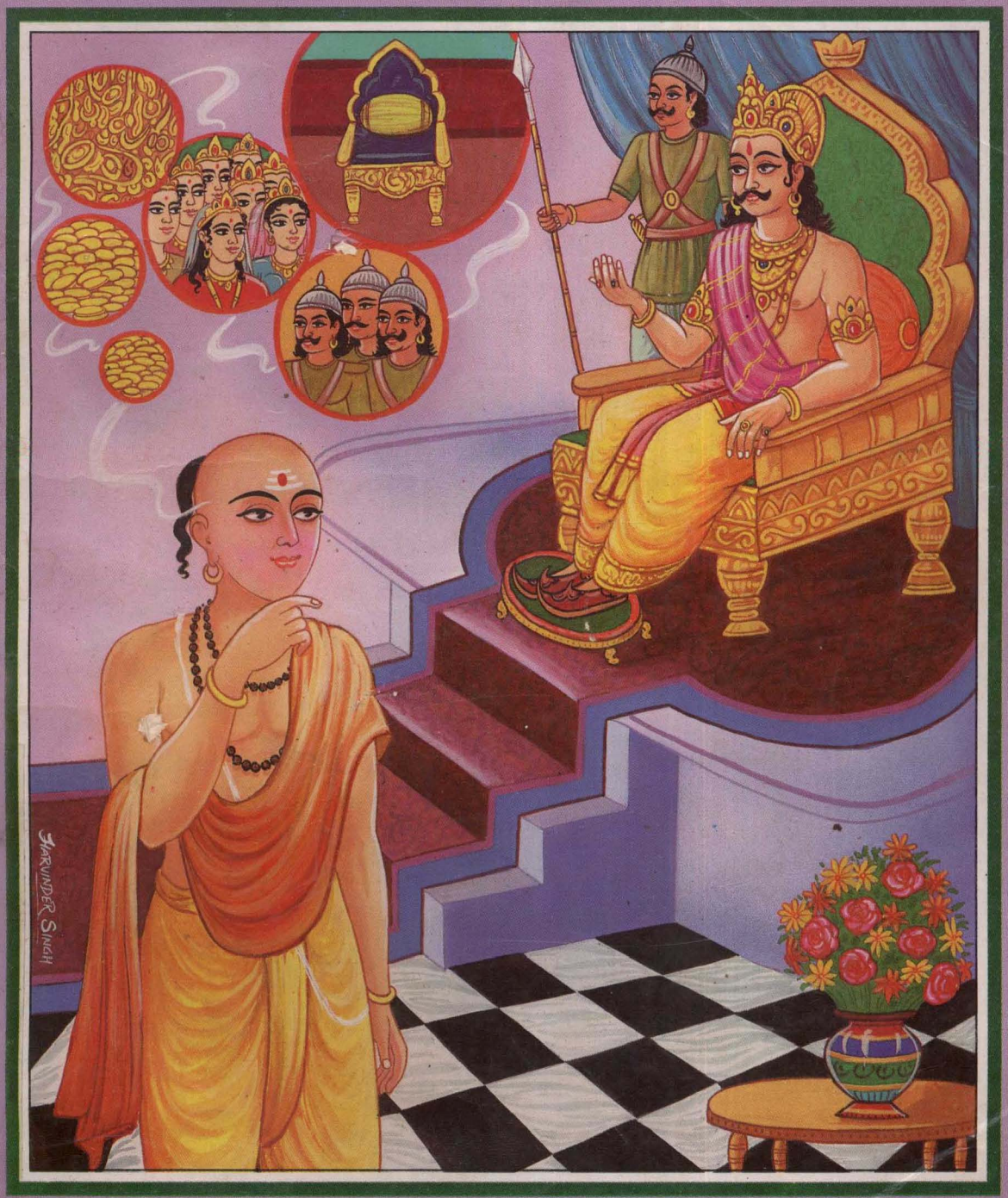

सुसंस्कार निर्माण विचार शुद्धि : ज्ञान वृद्धि मनोरंजन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृष्णा का जाल
(कपिल केवली)

संसार में गरीब इसलिए दुःखी है कि उनके पास जीवन निर्वाह के साधनों की कमी है, और धनवान इसलिए दुःखी है कि उसके पास भरपूर सुख-साधन होते हुए भी वह उनसे अधिक जुटाने के लिए दिन-रात दौड़ लगा रहा है। मनुष्य के शरीर की भूख तो मिट सकती है, किन्तु मन की भूख कैसे मिटे? मन का गड्ढा इतना गहरा है कि इसमें समूचे संसार की धन-सम्पदा भर दी जाये तब भी भर पाना मुश्किल है। इस मन के गड्ढे को भरने का एक ही उपाय है, इच्छाओं पर रोक लगाना। तृष्णा के घोड़े पर सन्तोष की लगाम लगाकर ही उसे वश में रखा जा सकता है।

कपिल एक गरीब ब्राह्मण छात्र है। बहुत ही सीधा-सादा। किन्तु एक दास-कन्या के प्रेमजाल में फँस जाता है और उसके लिए केवल दो माशा सोना पाने के चक्कर में चोर समझकर पकड़ा जाता है। राजा उसकी सच्चाई पर प्रसन्न होकर मनचाहा माँगने का वचन देता है। कपिल की तृष्णा भड़क जाती है। सोचता है–क्या; कितना माँगूँ ताकि बार-बार नहीं माँगना पड़े। माँगने की दौड़ में वह राजा का पूरा राज्य ही माँगने की सोचता है, फिर भी मन सन्तुष्ट नहीं हुआ। अन्त में, भटकता हुआ कपिल का मन मोड़ लेता है और तृष्णा के जाल से निकलकर कुछ भी नहीं माँगने का संकल्प कर लेता है।

तृष्णा के जाल से मुक्त होने की यह कहानी स्वयं भगवान महावीर ने सुनाई और हजारों श्रोताओं को इससे बोध मिला। इसी कहानी को चित्रमय रोचक संवादों में प्रस्तुत किया है, श्रमणसंघीय साध्वी श्री मदनकुंवर जी म. सा. ने।

-महोपाध्याय विनयसागर **-श्रीचन्द सुराना 'सरस'**

लेखक : साध्वी श्री मदनकुंवर जी म. सा. संयोजक : साध्वी श्री विजयश्री जी म. सा.

सम्पादक : श्रीचन्द सुराना 'सरस' प्रबन्ध सम्पादक : संजय सुराना चित्रण : श्यामल मित्र

प्रकाशक

दिवाकर प्रकाशन

ए-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड, आगरा-282 002. दूरभाष : 351165, 51789

सचिव, प्राकृत भारती एकादमी, जयपुर

3826, यती श्यामलाल जी का उपाश्रय, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर-302 003

अध्यक्ष, श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर (राज.)

मुद्रण एवं स्वत्वाधिकारी : संजय सुराना द्वारा दिवाकर प्रकाशन, ए-7, अवागढ़ हाउस, एम. जी. रोड, आगरा-2 के लिए ग्राफिक्स आर्ट प्रेस, मथुरा में मुद्रित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृष्णा का जाल

कौशाम्बी के राजपुरोहित महापण्डित काश्यप को प्रौढ़ावस्था में पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। नगर के संभ्रांत लोग, राजपुरोहित के घर पुत्र-जन्म की बधाई देने आने लगे। नगर-नरेश प्रसेनजित भी प्रधान सेनापति के साथ बधाई देने पधारे। बालक का मुख देखकर मुस्कराते हुए बोले–

फिर राजा प्रसेनजित ने जनसमूह के बीच घोषणा की–

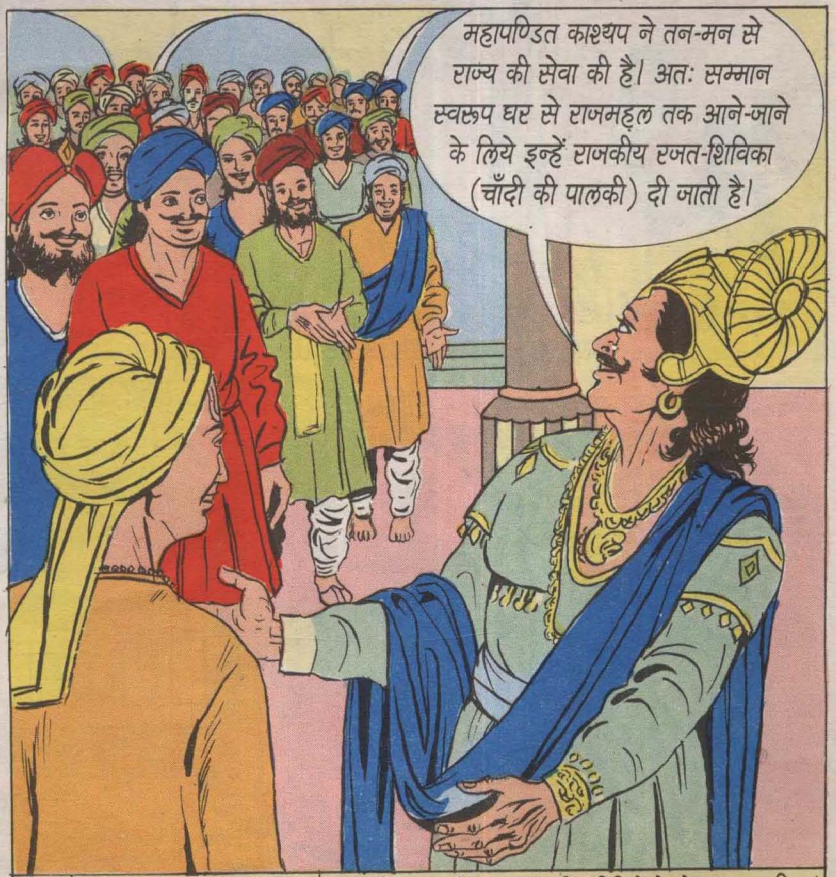

सभी अतिथियों ने करतल ध्वनि कर हर्ष प्रकट किया। इसके पश्चात् सभी अतिथियों ने भोजन ग्रहण किया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

106764

रात्रि के समय महापण्डित काश्यप ने पत्नी यशा से कहा–

देवी, हम-तुम कितने सौभाग्यशाली हैं इस अवस्था में पुत्र-प्राप्ति और फिर रजत-शिविका का विशिष्ट राज सम्मान हमारे कुल गौरव को उज्ज्वल बनाने वाला है।

हाँ स्वामी, यह पुरस्कार वास्तव में ही हमारे लिए अपार प्रसन्नता का विषय है।

दूसरे दिन से महापण्डित काश्यप चाँदी की पालकी में बैठकर गाजे-बाजे के साथ राजसभा की ओर चल दिये।

राजसभा में पहुँचने पर राजा ने राजपुरोहित को प्रणाम किया–

आइये पुरोहित जी, आज से आपका स्थान हमारे निकट होगा।

एक और सम्मान पाकर राजपुरोहित काश्यप प्रसन्न हो गये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

106764
anmandir@kobatirth.org

धीरे बालक कपिल जब सात वर्ष का ने उसकी माता यशा से कहा—

देवी ! कपिल सात वर्ष पूर्ण कर रहा है। अब इसे विद्याध्ययन के लिए गुरुकुल भेजना होगा।

नहीं स्वामी ! यह मेरा इकलौता आँखों का तारा है। मैं इसे अपने से दूर नहीं कर सकती।

पण्डित काश्यप ने समझाया—

तुम माता होकर अपने कर्त्तव्य से चूक रही हो !

कैसे स्वामी?

जो माता-पिता बालक को पढ़ाते नहीं हैं वे उसके हित-चिन्तक नहीं होते।

स्वामी ! आप राजपुरोहित हैं, अनेकों पण्डित, अध्यापक आपके प्रिय मित्र हैं। क्यों न हम कपिल को घर पर ही विद्याध्ययन कराएँ?

काश्यप ने कहा—

गुरुकुल में बालक जीवन का जो सर्वांगीण विकास सम्भव है।वह घर पर पढ़ने से कभी नहीं हो सकता। वृक्ष जैसा वन के शान्त वातावरण में फलता-फूलता है वैसा घर के आँगन में कभी नहीं फल सकता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यशा ने कहा–

स्वामी ! बीज में योग्यता व पात्रता होगी तो कहीं पर भी वह अपना विकास कर लेगा।

यशा ! तुम पुत्र-मोह में अपने कर्त्तव्य से भटक रही हो। यदि गुरुकुल में नहीं जायेगा तो यह निश्चित ही मूर्ख रह जायेगा। फिर तुम पछताओगी।

यशा ने कपिल को गुरुकुल नहीं भेजा। घर पर रहकर कपिल लाड़-प्यार से बिगड़ने लगा।

अब कपिल दिन-रात अपने साथी बालकों के साथ खेलता-कूदता रहता। घर पर पढ़ता भी तो उसका मन नहीं लगता।

माँ, अब और नहीं पढ़ा जाता। मैं मित्रों के साथ गेंद खेलने जा रहा हूँ। वे इंतजार कर रहे होंगे।

जा बेटा ! पढ़ते-पढ़ते थक गया होगा।

खेल-कूद में और माँ के लाड़-प्यार में ही उसका बचपन बीतने लगा।

कपिल लगभग चौदह वर्ष का हुआ होगा, एक दिन पण्डित काश्यप अचानक बीमार हुए और थोड़े ही दिनों बाद उनकी मृत्यु हो गई।

कुछ दिनों पश्चात् महाराज प्रसेनजित ने नगर के एक अन्य विद्वान् ब्राह्मण को राजपुरोहित का पद दे दिया–

हमारे महापण्डित काश्यप का पुत्र कपिल अभी शिक्षित नहीं है अतः आज से राजपुरोहित का पद महापण्डित सोमिल को प्रदान किया जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजपुरोहित सोमिल अब काश्यप के घर के सामने से ही चाँदी की पालकी में बैठकर गाजे-बाजे के साथ राजसभा में जाता। किसी उत्सव के दिन राजपुरोहित सोमिल अपने मित्र-परिवार व राजसेवकों के साथ राजसभा में जा रहा था।

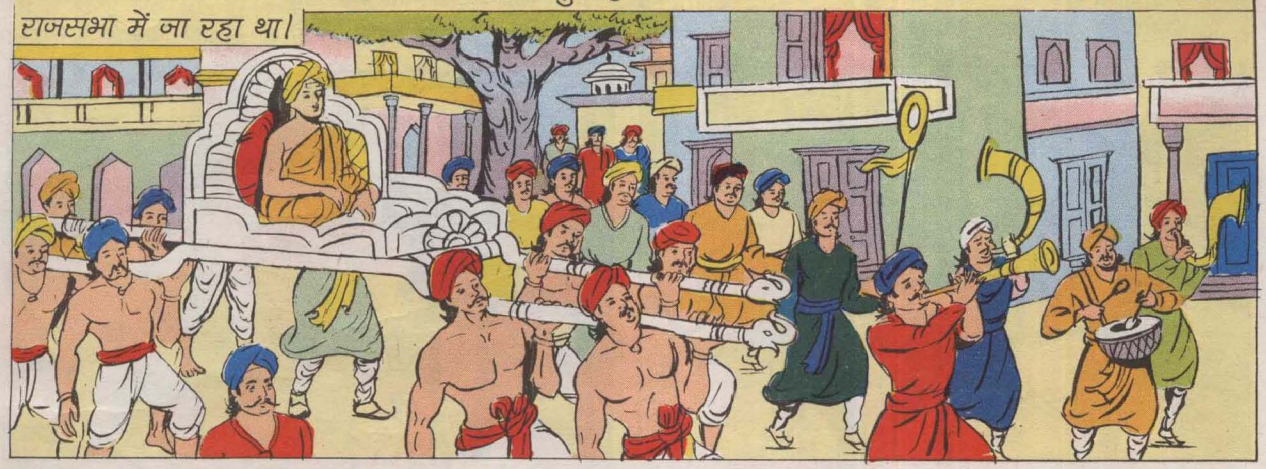

बाजों की आवाज सुनकर कपिल दौड़कर माँ के पास आया—

यशा ऊपर गवाक्ष में खड़ी होकर शोभा यात्रा देखने लगी। उसने चाँदी की पालकी में राजपुरोहित को बैठे देखा तो उसकी आँखों में टपटप आँसू गिरने लगे, वह रोने लगी।

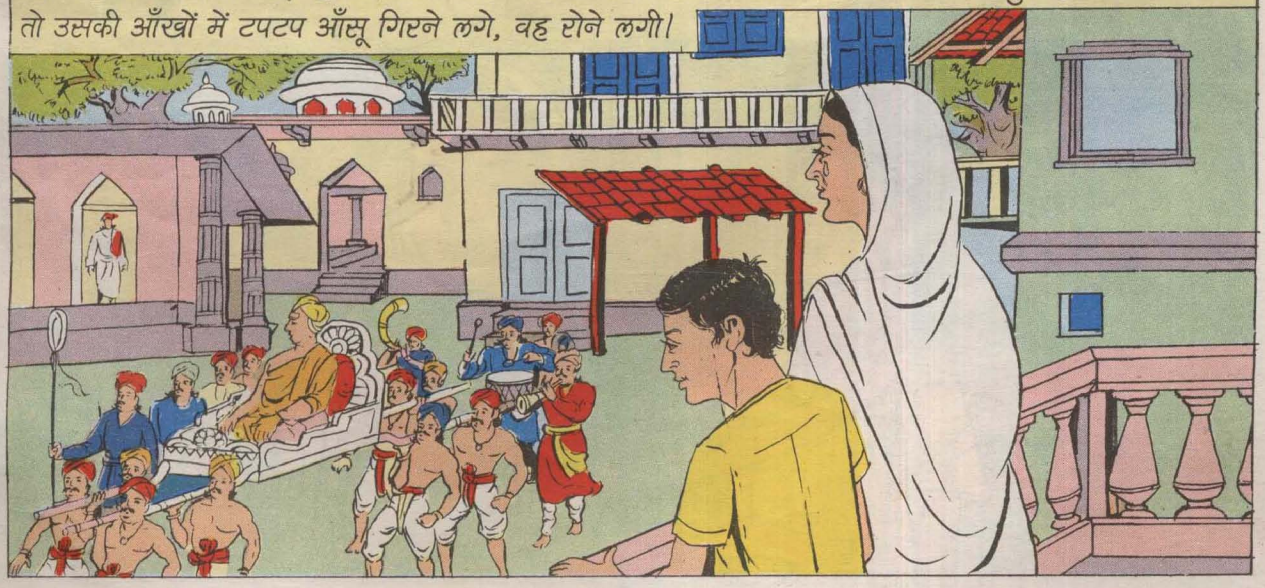

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कपिल ने आश्चर्य के साथ पूछा–

माँ ! यह क्या? ये लोग तो खुशियों में गाते-बजाते जा रहे हैं और तू रो रही है?

बेटा ! मेरे तो अब रोने के ही दिन हैं।

कपिल ने माँ के मुँह पर हथेली रखी–

माँ ! ऐसी अशुभ बात मत बोल ! क्या दुःख है तुम्हें? इन लोगों ने क्या बिगाड़ा है तुम्हारा?

बेटा ! मेरे रोने का कारण ये लोग नहीं, तू है?

कपिल माँ के आँसू पोंछता हुआ बोला–

माँ ! पहेली मत बुझाओ, सच-सच बताओ क्या बात है? क्यों रो रही हो तुम?

बेटा ! एक दिन इस ठाट-बाट से तुम्हारे पिताजी राजसभा में जाते थे। सैकड़ों लोग महापण्डित काश्यप की जय-जयकार करते चलते थे। यही सम्मान, यही रुतबा तुम्हारे पिताजी का था।

कपिल ने आँखें फाड़कर पूछा–

तो फिर यह सम्मान हमको क्यों नहीं मिला? मेरे पिता की राज-पुरोहित की गद्दी मुझे क्यों नहीं मिली?

पुत्र ! क्योंकि तू पढ़ा-लिखा नहीं न। राजपुरोहित को तो वेद, पुराण, ज्योतिष, गणित सभी का ज्ञान होना चाहिए न।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यशा कपिल के भावुक चेहरे को उदास होकर देखती है। थोड़ी देर सोचकर यशा बोली–

वत्स ! श्रावस्ती के महापण्डित इन्द्रदत्त तेरे पिताजी के घनिष्ट मित्र हैं। यदि वे चाहें तो तुझे वैसा ही पण्डित बना सकते हैं जैसे तेरे पिताजी थे।

कपिल की आँखों में चमक आ गई।

बस माँ, मैं तुम्हारे चरणों की शपथ खाकर कहता हूँ। मैं विद्या पढ़ूँगा, अवश्य पढ़ूँगा।

वत्स ! महान् कर्म ही मनुष्य को महान् बनाता है। तेरा संकल्प अवश्य सफल होगा।

कपिल ने माँ के चरण स्पर्श किये और श्रावस्ती की ओर चल पड़ा।

कई दिनों के प्रवास के बाद थका-हारा कपिल श्रावस्ती पहुँचा। नगर के बाहर एक सरोवर की पाल पर बैठकर हाथ-मुँह धोये और फिर आगे चलने की तैयारी करने लगा। तभी कुछ वटुक छात्र सरोवर पर नहाने के लिए आये। कपिल ने छात्र वटुकों से पूछा–

बन्धु ! क्या आप महापण्डित इन्द्रदत्त को जानते हैं?

उन्हें कौन नहीं जानता? श्रावस्ती के गौरव हैं वे तो। हम उन्हीं के शिष्य हैं।

अच्छा, तो कहाँ रहते हैं वे?

तुम कौन हो? किसलिए आये हो यहाँ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कपिल उठा और चलता-चलता सीधा कुटिया के सामने पहुँचा। घर के बाहर गोबर-मिट्टी से लिपे चबूतरे पर स्वयं पण्डित इन्द्रदत्त ही बैठे थे। कपिल ने साष्टांग प्रणाम किया–

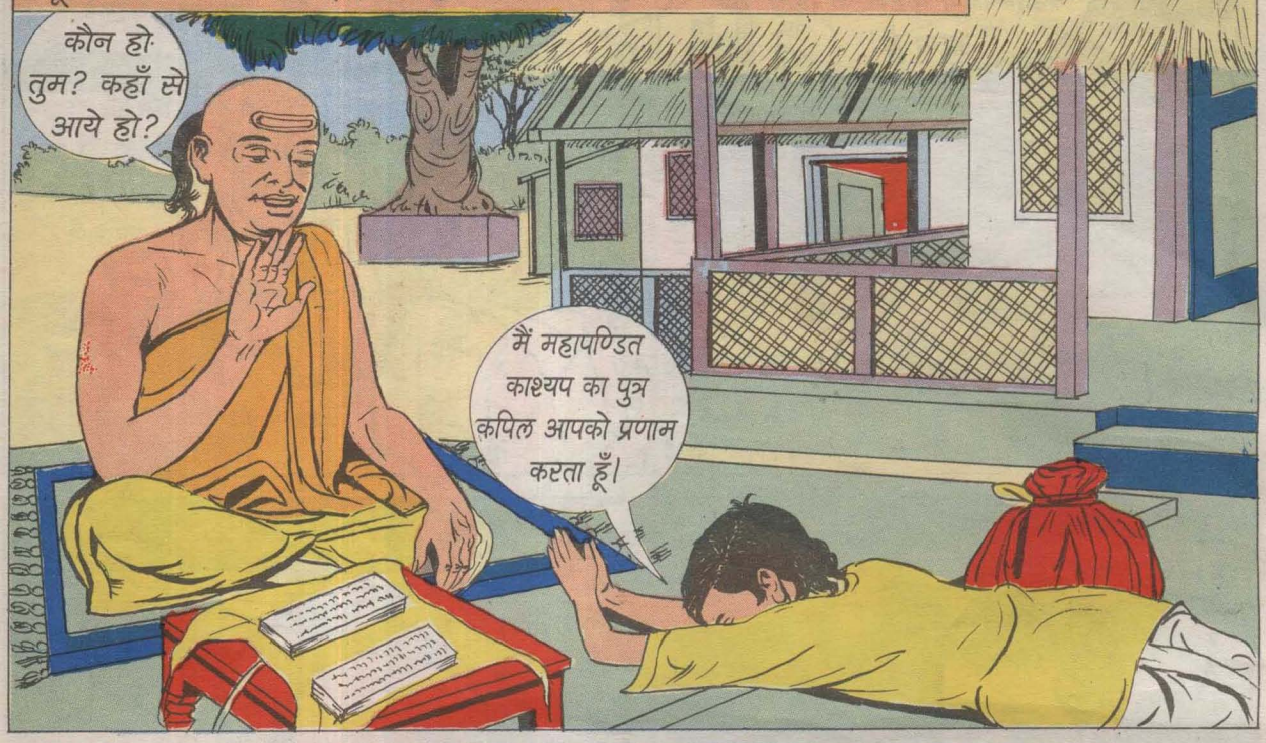

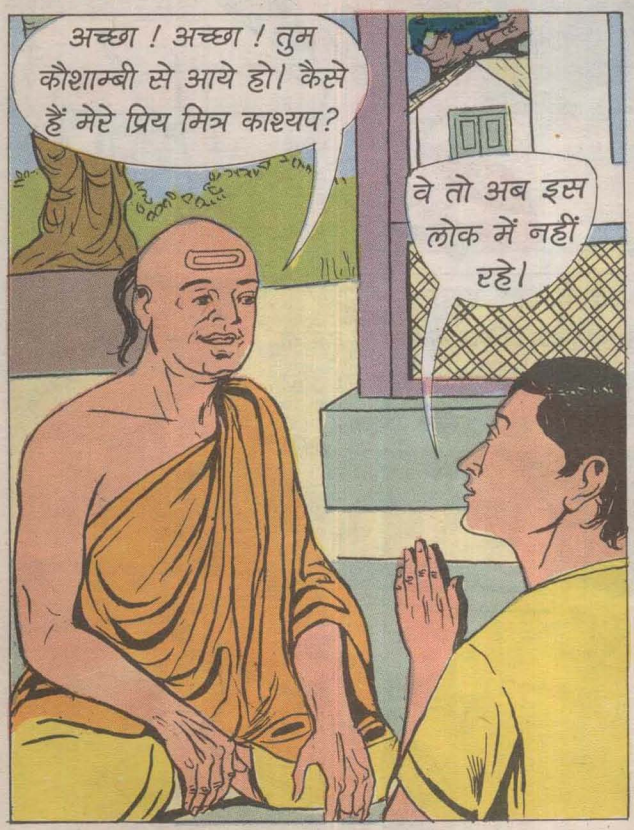

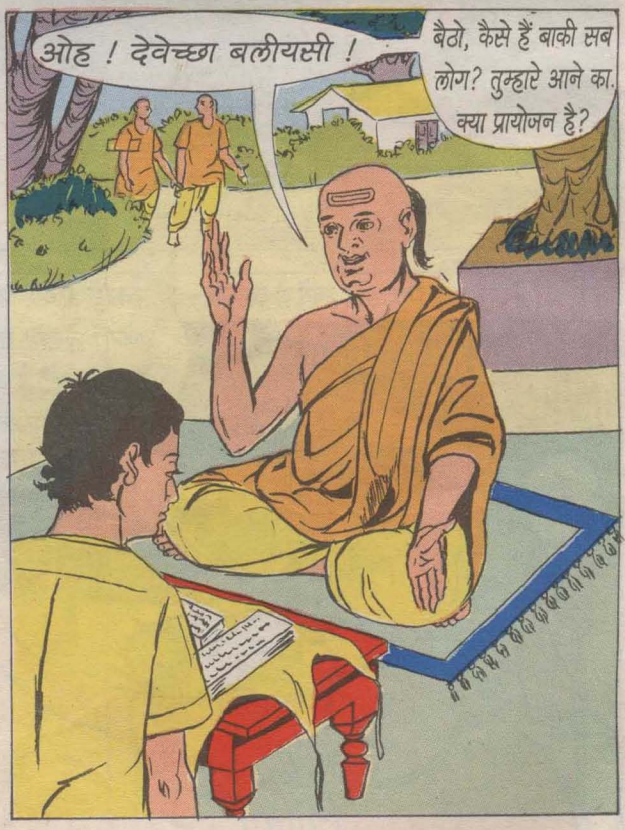

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कपिल ने अपने आने का कारण बताते हुए कहा–

मेरे लिए आप ही आश्रय हैं। कृपाकर मुझे विद्याध्ययन कराइए। मैं सम्पूर्ण निष्ठा के साथ अध्ययन करूँगा।

महापण्डित इन्द्रदत्त कुछ देर सोचते रहे।

तभी नगर के श्रेष्ठी शालिभद्र महापण्डित इन्द्रदत्त से मिलने के लिए आये। नमस्कार करके पूछा–

विप्रवर ! कैसा है आपका स्वास्थ्य? अध्यापन कार्य ठीक तो चल रहा है न?

हाँ श्रेष्ठीवर, लगभग सौ विद्यार्थी अध्ययन हेतु आ रहे हैं। परन्तु स्थान का अभाव होने से अब अन्य विद्यार्थियों को कठिनाई रहती है।

विप्रवर ! स्थान की कमी के कारण कोई छात्र ज्ञान-लाभ से वंचित रहे तो उचित नहीं लगता। मेरे भवन के अतिथि-कक्ष में यदि आप किसी योग्य छात्र को रखना चाहें तो सहर्ष मुझे सेवा का अवसर दें।

यह छात्र मेरे प्रिय मित्र राजपुरोहित काश्यप का पुत्र है। कौशाम्बी से अध्ययन हेतु आया है। अपने अतिथि-कक्ष में इसकी उचित व्यवस्था कर सकते हैं।

श्रेष्ठ शालिभद्र ने कपिल से कहा–

वटुक ! चलो मेरे यहाँ तुम्हें भोजन आवास की सब सुविधाएँ मिलेंगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रेष्ठी शालिभद्र कपिल को अपने घर पर ले आये। भवन व उद्यान के बाहर अतिथि-कक्ष बताते हुए कहा–

वटुक ! तुम यहाँ रहो और किसी भी वस्तु की जरूरत हो तो निःसंकोच माँग लेना।

फिर अपने घर की दास-कन्या कपिला को बुलाकर कहा–

कपिला ! देखो यह छात्र हमारा मेहमान है। गुरुमित्र का पुत्र है। इसके भोजन आदि का समुचित ध्यान रखना।

ठीक है स्वामी, मैं आपकी आज्ञा का पूरा ध्यान रखूँगी।

कपिला ने तुरन्त ही कक्ष को साफ किया। छात्र कपिल का सामान एक तरफ रखकर कहा–

मेरा नाम कपिला है। जब भी भोजन आदि की आवश्यकता हो आप मुझे पुकार लें।

कपिल प्रातः स्नान आदि से निवृत्त होकर गुरुकुल में अध्ययन के लिए चला जाता। दुपहर के बाद आता। भोजन कर कुछ समय विश्राम कर पुनः गुरुकुल में चला जाता। गुरुकुल के नियमानुसार वह केवल एक ही समय भोजन करता। दिन-रात अध्ययन आदि में लगा रहता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक बार वर्षा ऋतु में कपिल को ज्वर आ गया। जब वह दुपहर तक कक्ष से बाहर नहीं आया तो दास-कन्या कपिला को चिन्ता हुई। उसने कक्ष के अन्दर आकर देखा, तो कपिल ज्वर में पड़ा बुदबुदा रहा था। कपिला ने पुकारा–

कपिल आवाज सुनकर चौंक गया–अपने वस्त्र आदि ठीक करता हुआ वह जैसे ही उठा, तेज चक्कर आया और वह गिर पड़ा। कपिला ने झट से उठाया–

कपिला ने हाथ का सहारा देकर उसे बिस्तर पर बिठाया।

कपिला के हाथ का स्पर्श पाकर कपिल का हृदय तरंगित हो उठा। उसने कहा–

कपिला ने चौंककर अपना हाथ खींच लिया–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

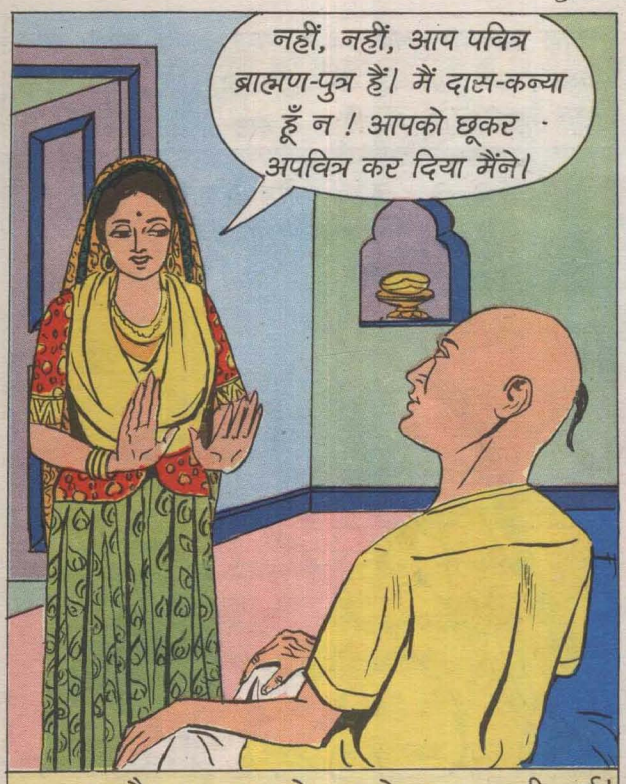

और वह झट से कक्ष के बाहर चली गई।

तीन-चार दिन तक कपिल ज्वरग्रस्त रहा। कपिला की योग्य देखभाल से वह स्वस्थ हो गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कपिला हाथ छुड़ाकर दूर हट गई–

नहीं, नहीं, ऐसा नहीं कहो। मैं तो एक भाग्यहीन दास-कन्या हूँ। मुझे पता नहीं मेरे माता-पिता कौन हैं, कहाँ हैं? इस संसार में कोई नहीं है मेरा।

कोई क्यों नहीं, क्या मुझे भी तुम अपना नहीं समझतीं?

इस प्रकार दास-कन्या कपिला की सेवा और अपनत्व ने छात्र कपिल का मन मोह लिया। धीरे-धीरे दोनों में परस्पर गहरा प्रेम हो गया।

कपिला ! मैं तुम्हारे जीवन के अन्धकार को दीपक की भाँति दूर कर दूँगा।

एक दिन कपिल गुरुकुल से घर पर आया तो कपिला उदास बैठी थी। उदास मुर्झाया चेहरा देखकर कपिल ने पूछा–

मैं जब भी आता हूँ तब मुस्कराकर स्वागत करती हो, आज यह रोनी-सी सूरत लिये क्यों खड़ी हो? क्या चिन्ता है तुम्हें?

कल नगर में दास-महोत्सव है, मेरी सभी सहेलियाँ जायेंगी।

तुम नहीं जाओगी?

मैं कैसे जाऊँ? मेरे पास न तो नये सुन्दर वस्त्र हैं और न ही कुछ खरीदने के लिए धन है। अनाथ दास-कन्या को उत्सव से क्या लेना-देना?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कपिल कुछ देर सोचने लगा। कपिला की उदासी और गरीबी की पीड़ा उसके हृदय में चुभने लगी। वह बोला–

मैं ब्राह्मण-पुत्र हूँ। भिक्षा माँगकर पेट तो भर सकता हूँ परन्तु माँगने पर धन कौन देगा मुझे?

कपिला ने कहा–

तुम्हें माँगने की जरूरत क्या है? तुम तो आशीर्वाद देकर भी धन पा सकते हो।

कैसे? आशीर्वाद देने पर धन कौन देगा?

हमारा नगरसेठ 'धन' नित्य प्रातः सबसे पहले आशीर्वाद देने वाले को दो मासा स्वर्ण दान करता है।

?!!

कपिल के मन में उत्साह जाग उठा, कपिल ने दास-कन्या का हाथ पकड़कर कहा–

तब तो मैं अवश्य धन लाकर तुझे दूँगा। कपिला, तुम उदास मत बनो, यह ब्राह्मण कुमार का वचन है।

तुम कितने अच्छे हो कपिल !

कपिला का मुर्झाया चेहरा खिल उठा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कपिल को रातभर नींद नहीं आई। बार-बार उठकर वह आकाश की तरफ देखने लगता–

कहीं मुझे विलम्ब न हो जाय? यदि कोई दूसरा मुझसे पहले पहुँच गया तो दो मासा सोना नहीं मिलेगा।

कपिल बैठा-बैठा आशा के महल बनाने लगा।

दो मासा सोना लाकर कपिला को दूँगा तो वह प्रसन्न हो जायेगी। फिर तो मेरी हो ही जायेगी वह। मुझे ही चाहेगी।

इन्हीं विचारों में खोये कपिल को समय का भान नहीं रहा। मध्य रात में ही वह घर से निकल गया। और धन श्रेष्ठी के भवन की तरफ चल दिया। छोटी-छोटी गलियों को पार कर वह राजमार्ग पर आया और डरता, सहमता चल रहा था कि पीछे से एक कड़कती आवाज आई–

अरे, कौन है? कहाँ जा रहा है?

ओह, पहरेदार, मुझे छिप जाना चाहिये।

कपिल सहम गया। एक भवन की ओट में छुप गया। सोचने लगा–

पहरेदार ने मुझे कहीं पकड़ लिया तो पूछेगा रात को कहाँ जा रहा है, फिर तो बात का भेद खुल जायेगा। श्रेष्ठी शालिभद्र और आचार्य क्या कहेंगे मुझे? उन्हें हमारे गुप्त प्रेम का भी पता चल जायेगा।

कहाँ चला गया? अभी तो यहीं था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

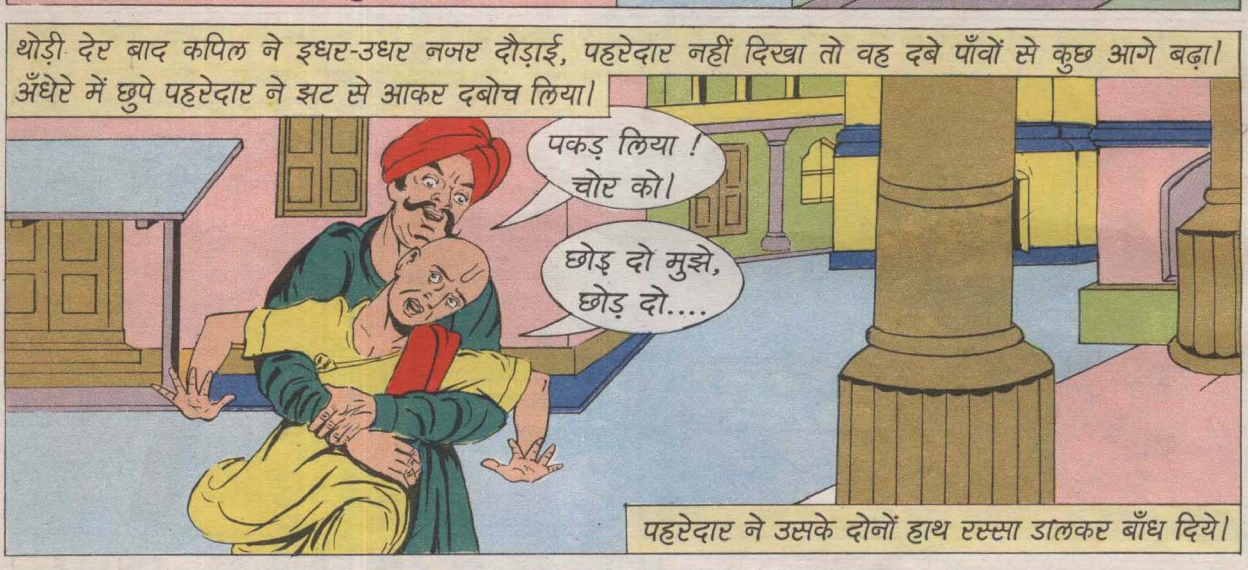

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कपिल ने कहा—

मैं श्रेष्ठी धन के घर पर जा रहा हूँ आशीर्वाद देने।

हाँ, हाँ ! तुम्हारा आशीर्वाद लेने नगरसेठ आधी रात में प्रतीक्षा कर रहे होंगे न? क्या बहाना बनाया है? इसे ही कहते हैं चोरी और सीनाजोरी।

पहरेदार ने कपिल की पीठ पर दो-चार डंडे बरसाये और लाकर कोतवाली में बंद कर दिया।

प्रातः कपिल को राजसभा में राजा जितशत्रु के समक्ष उपस्थित किया गया। सिपाही कपिल को लेकर राजसभा में आये। कपिल शर्म के मारे नीची आँखें किये हुए खड़ा था। राजा ने कपिल की भोलीभाली सूरत देखी तो उस पर तरस आ गया। सोचा—

यह चोर तो नहीं हो सकता। आँखों में शर्म है, चेहरा भी कितना कोमल और निर्दोष है इसका।

फिर भी जोरदार आवाज में पूछा—

रात को किसलिए घूम रहे थे? कौन हो तुम? ध्यान रखो, सब सच-सच बताना। यदि झूठ बोले तो मृत्युदण्ड की सजा मिलेगी....

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

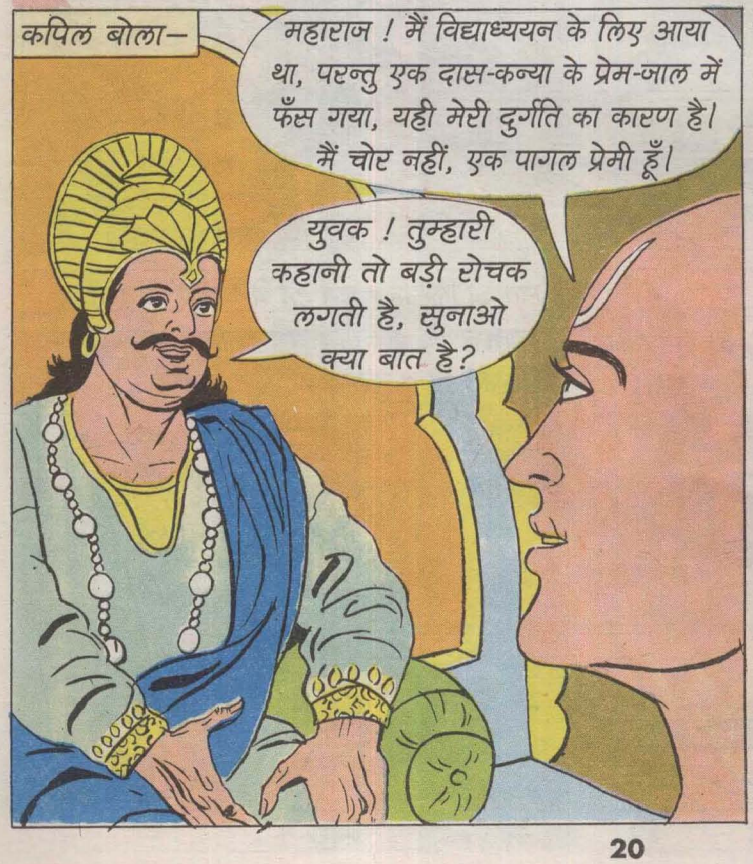

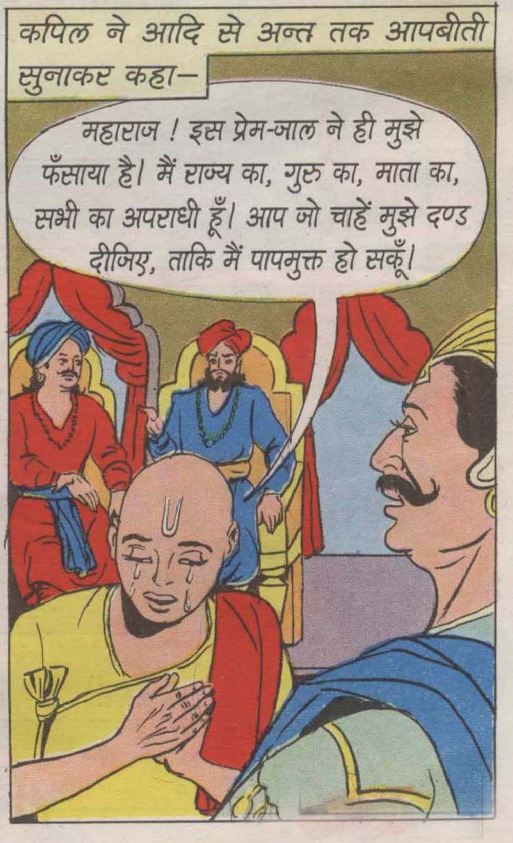

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कपिल की कथा सुनकर राजा जितशत्रु का हृदय पसीज उठा। उसने कहा–

युवक ! तुम्हारी करुण कथा सुनकर तो हमें भी दया आ रही है। फिर तुमने निःसंकोच सत्य बोला। इस पर भी हम प्रसन्न हैं। तुम्हें दो मासा सोना चाहिए था न? चलो, अब तुम जितना सोना चाहो माँग लो !

कपिल आश्चर्य के साथ देखने लगा–

हें ! यह क्या, दंड के बदले पुरस्कार ! कहीं मेरा उपहास तो नहीं कर रहे हैं सब लोग?

नहीं, नहीं, सत्य के साथ कभी मजाक नहीं होता। अब तो मैं जो माँगूँगा वही मिलेगा...क्या माँगूँ?

उसकी आशाओं को पंख लग गये। वह खड़ा-खड़ा सोचता रहा–

कपिल, ऐसा अवसर बार-बार नहीं आयेगा। आज राजा प्रसन्न है तो इतना माँग ले कि फिर दुबारा माँगना ही न पड़े....

क्या माँगूँ, कितना माँगूँ?

राजा ने कहा–

युवक ! तुम चुप क्यों हो? हमने कहा न ! तुम जो चाहो वह माँग लो, मिलेगा।

महाराज ! मुझे सोचने के लिए कुछ समय चाहिए।

ठीक है, सामने उद्यान है वहाँ बैठकर सोच लो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कपिल राजसभा के सामने ही उद्यान में एक अशोक वृक्ष की छाया में बैठ गया और सोचने लगा–

जब धन मिल जायेगा तो कपिला के साथ मेरा विवाह हो जायेगा। फिर तो भवन, वाहन के लिए भी धन की जरूरत होगी....एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ माँग लूँ।

फिर उसकी कल्पना ऊँची उड़ती है।

एक लाख से भी क्या होगा? एक करोड़, नहीं-नहीं सवा करोड़ मुद्राएँ माँग लूँ। इतना धन ठीक होगा....

कपिल स्वप्न-लोक में पहुँच गया–

क्यों न राजा से एक छोटा-सा राज्य माँग लूँ। फिर कमाने का झंझट ही नहीं रहेगा।

फिर सोचता है–

नहीं, यह अपर्याप्त है फिर भी बड़े राजाओं का भय बना रहेगा? क्यों न इसी राज्य का पूरा राज-सिंहासन माँग लूँ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोचते-सोचते सहसा कपिल के विचारों को झटका लगा–

मूर्ख कपिल, क्या माँग रहा है, जो तुझे दे रहा है तू उसे ही हड़पना चाहता है, छिः छिः कृतघ्न !

कपिल को जैसे अनुभव होने लगा–वह तृष्णा के भँवर-जाल में फँसकर गोते खा रहा है। कई बड़े-बड़े मगरमच्छ उसे निगलने को मुँह बांये खड़े हैं।

तृष्णा

अहंकार

लालच

कपिल चौंक गया–

तृष्णा का कोई पार नहीं। यदि समूचे संसार का धन वैभव भी मिल गया तो भी मेरा मन नहीं भरेगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसे दीखता है सोने-चाँदी के बड़े-बड़े ढेर लगे हैं। कपिल उनके चारों तरफ तेली की घानी से बँधे बैल की तरह चक्कर काट रहा है।

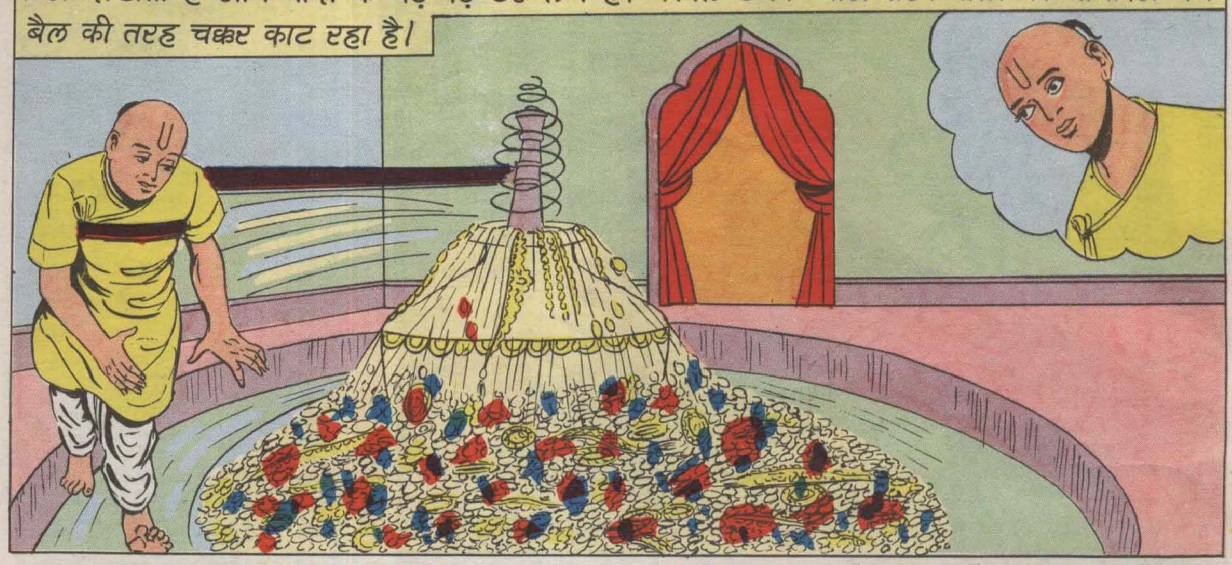

वह आँख मूँदकर अपने भीतर निहारने लगा। एक दृश्य उसके सामने आया–अग्नि-कुण्ड में जलती हुई अग्नि में एक व्यक्ति घी डाल रहा है, अग्नि को बुझाने के लिए। परन्तु अग्नि और अधिक प्रज्वलित हो रही है। जैसे-जैसे वह घी डालकर सोचता है–अब अग्नि-देवता शान्त हो जायेगा किन्तु अग्नि और प्रदीप्त हो उठी।

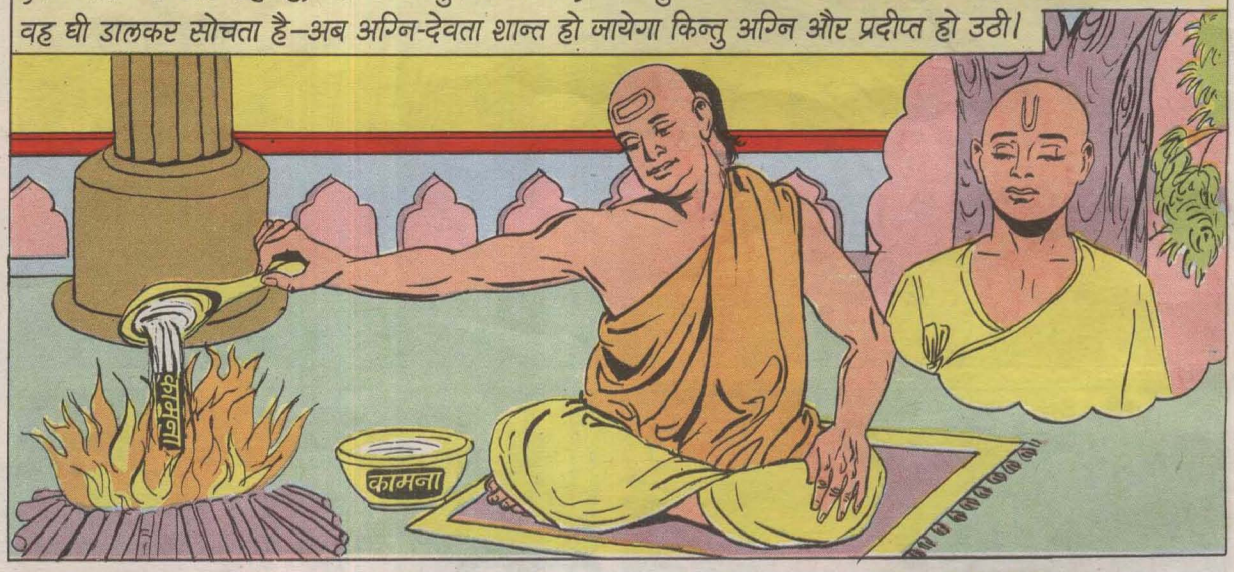

कपिल सोचता है–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तभी एक दूसरा दृश्य सामने आता है। आकाश में उड़ती एक चील माँस के टुकड़े पर झपटकर चोंच में पकड़ती है।

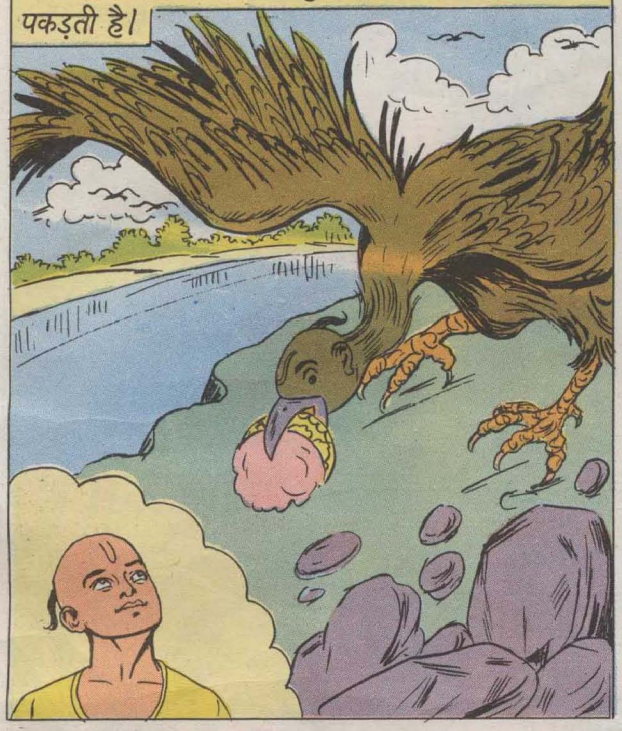

वह आकाश में उड़ी कि कई बड़े-बड़े गिद्ध उसका पीछा करने लगे, उस पर झपटने लगते हैं। तीखी चोंच मार-मारकर उसे घायल कर रहे हैं।

चील लहूलुहान हो गई। तभी उसके मुँह से माँस का टुकड़ा गिर गया। नीचे गिद्ध-मंडली माँस-पिंड पर टूट पड़ी, घायल चील एक तरफ शान्त-सी बैठी है।

कपिल के मन को झटका-सा लगा—बस, शान्ति का सूत्र हाथ आ गया।

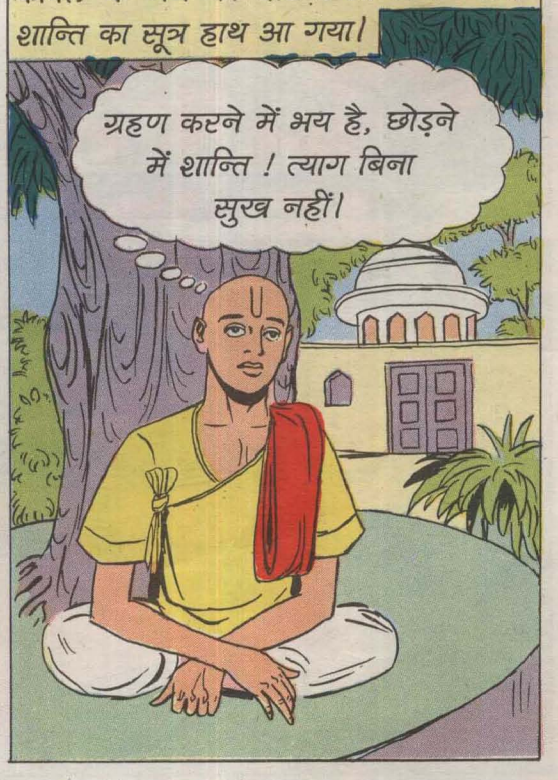

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कपिल सोचता है–

जिस धन को पाने की तृष्णा ने मुझे इतना तड़पाया है। वह धन आने पर कितना परेशान करेगा?

नहीं ! मुझे कुछ नहीं चाहिए। धन से सुख नहीं, सुख तो मन से उपजेगा।

कपिल ने इच्छाओं पर लगाम डाल दी।

काफी देर हो जाने पर भी कपिल वापस दरबार में नहीं आया तो राजा ने कोतवाल को कहा–

युवक कहाँ गया? अब तक उसने सोचा नहीं ! उससे कहो, जो माँगना है माँग ले।

कोतवाल उद्यान में आया, कपिल तो आँखें मूँदे शान्त स्थिर बैठा है। कोतवाल ने पुकारा–

अरे ब्राह्मण कुमार ! उठो, कुछ माँग लो, महाराज प्रतीक्षा कर रहे हैं।

कपिल अपने विचारों में ही स्थिर था। वह नहीं उठा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोतवाल ने वापस आकर राजा से कहा–

महाराज ! वह तो न हिलता है, न डुलता है। कुछ उत्तर भी नहीं दे रहा है।

राजा एक आशंका से काँप गया–

क्या सोच रहा होगा? कहीं वह पूरा राज्य ही न माँग ले, फिर क्या होगा?

राजा स्वयं उठा, उद्यान में आकर पुकारा। परन्तु कपिल तो अपने आप में खोया था। उसने सुना ही नहीं। राजा ने निकट आकर उसे झकझोरा–

कपिल, देखो विलम्ब हो रहा है, जो माँगना है झट से माँग लो।

राजा के झकझोरने से कपिल जैसे योगनिद्रा से उठा हो, उसके चेहरे पर अपूर्व शान्ति और तेज दमक रहा था। प्रसन्न भाव से उसने कहा–

राजन् ! अब मुझे कुछ नहीं चाहिए।

क्या? कुछ नहीं ! अरे, तुम्हारी जो इच्छा हो वही माँग लो। मैं दूँगा, अवश्य दूँगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

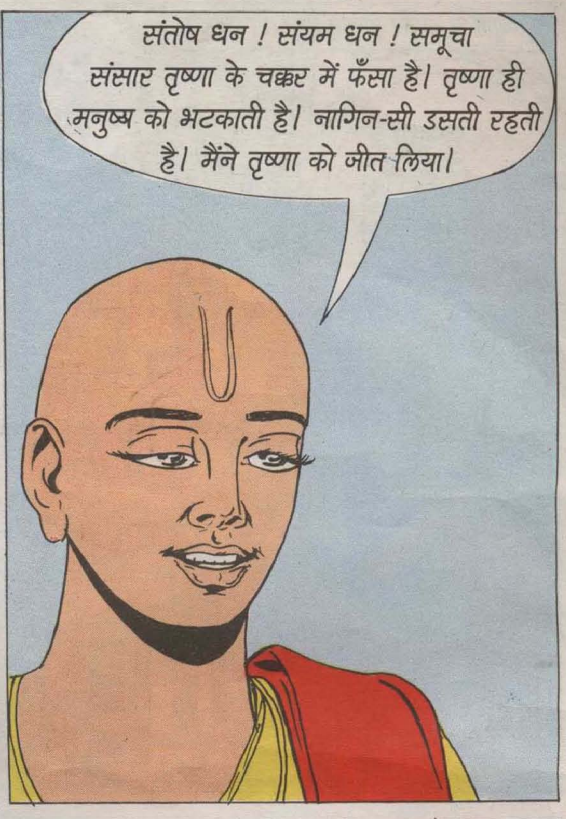

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

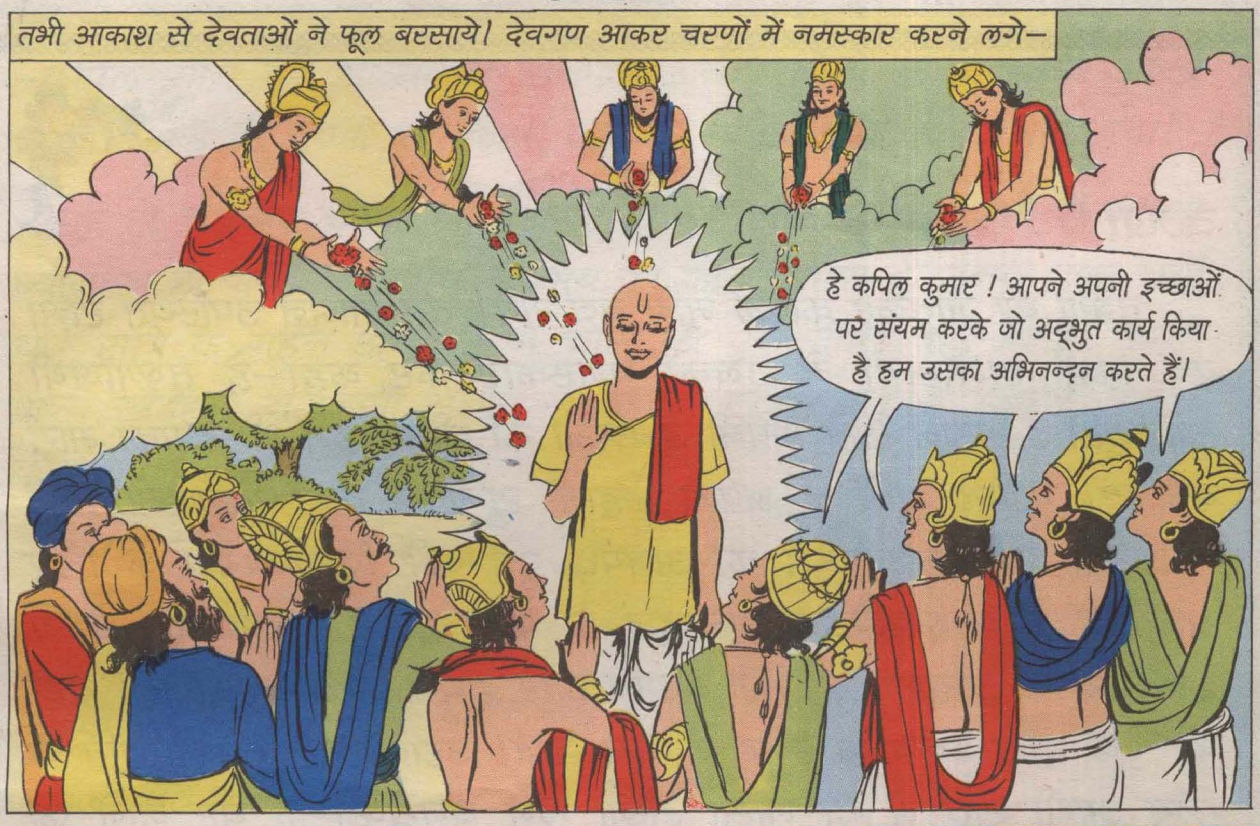

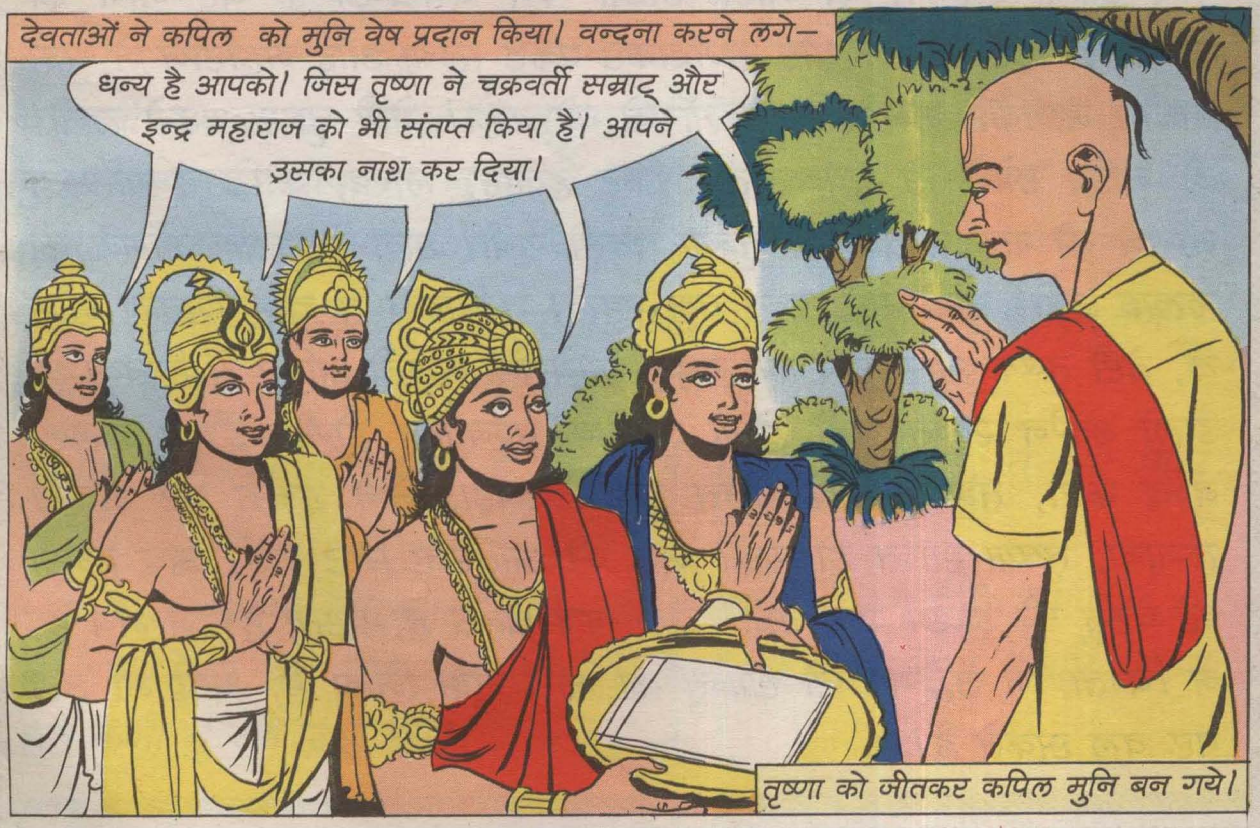

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कथा प्रवाह ⟶

तृष्णा को जीतकर कपिल मुनि बन गये। तब सामने उपस्थित राजा एवं सभी सभासदों ने उनको नमस्कार कर कहा–हे तृष्णाजयी त्यागमूर्ति ! आपने कैसे अपनी इच्छाओं को जीता, हमें भी इसका मार्ग बताइए। कपिल मुनि ने अपनी कहानी सुनाकर कहा–विज्ञजनो ! मैं कौशाम्बी के राजपुरोहित का अनपढ़ पुत्र था। विद्याध्ययन के लिए श्रावस्ती के महापण्डित इन्द्रदत्त के पास आया। यहाँ पर श्रेष्ठी शालिभद्र के आवास पर मेरी भोजन और शयन की व्यवस्था थी। यहीं पर एक दास-कन्या के स्नेह में बँध गया। उसकी मनोकामना पूर्ति के लिए आधी रात में दो मासा सोना लेने धनश्रेष्ठी के घर जाने को निकला। पहरेदारों ने चोर समझकर पकड़ लिया और महाराज ने मुझे निर्दोष मानकर मन इच्छित माँगने को कहा। मेरी तृष्णा बढ़ने लगी। दो मासा सोने से एक तोला, फिर हजार, लाख, कोटि स्वर्ण-मुद्रा माँगने को मन ललचाया। तृष्णा बढ़ती गयी। राज-सिंहासन माँगने की ललक उठी। तभी मेरे अन्तःचक्षु खुले। कपिल ! तू चाहे जितना माँग ले, तेरी तृष्णा आगे से आगे बढ़ती जायेगी। जलती अग्नि में जितना घी डालो अग्नि शान्त नहीं होगी, अधिक प्रज्वलित होगी। ईंधन डालना बन्द करो, तभी अग्नि शान्त होगी....बस, मैंने इच्छा पर अंकुश लगाया, तृष्णा शान्त हो गई। मन की आतुरता मिट गई। अब किसी भी वस्तु की इच्छा नहीं रही। मेरा मन शान्त है, प्रसन्न है। न भय है, न चिन्ता, न उद्वेग। जो शान्ति का मार्ग मुझे मिला है, आप भी उस पर चल सकते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

–कपिल मुनि की आत्मकथा सुनकर अनेक लोगों के मन की आँखें खुलीं। उन्हें भी तृष्णा पर विजय पाने का संतोष रूपी मार्ग मिल गया।

–वहाँ से चलकर कपिल मुनि नगर से दूर सुनसान खंडहरों में जाकर ध्यानस्थ हो गये। वे निर्भय थे, भय का कोई कारण ही उनके पास नहीं था। रात्रि के गहन अंधकार में चोरों की एक टोली वहाँ आई। अपने शून्य खंडहरों में किसी अज्ञात व्यक्ति को खड़ा देखकर उन्होंने पूछा– कौन हो तुम?

–कपिल मुनि ने कहा–मैं श्रमण हूँ।

–चोर–यहाँ क्यों खड़े हो?

–कपिल मुनि–आत्मा के भीतर छुपे असीम धन को पाने।

–चोर–वह कौन-सा धन है? क्या हमें भी बता सकते हो?

–कपिल मुनि–क्यों नहीं ! वह धन तो ऐसा है जिसे पाने के बाद चक्रवर्ती सम्राट् का वैभव भी तुच्छ है। ऐसा धन पाने के बाद व्यक्ति दुःख, चिन्ता, शोक से मुक्त हो जाता है। अगले जन्म में भी उसे दुर्गति का भय नहीं रहता।

–यह सुनकर चोरों का सरदार बलभद्र आगे आया। बोला–श्रमण क्या तुम सच कह रहे हो? ऐसा गूढ़ धन तुम्हारे पास है?

कपिल मुनि–हाँ, मेरे पास है, तुम्हें भी मिल सकता है, तुम्हारे पास भी है।

–सरदार–श्रमण ! तुम्हारी बातें बड़ी मनोरंजक लग रही हैं। हमें भी बताओ, ऐसा वह धन कौन-सा है? कैसे, कहाँ मिलेगा, जिसे पाकर हम कभी दुःखी नहीं होंगे?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

–कपिल मुनि ने कहा–तुम सब शान्तिपूर्वक सुनो, मैं सुनाता हूँ। मुनि ने अपने मधुर स्वर में गाना प्रारम्भ किया–

–अधुवे असासयंमि.....इस अध्रुव चंचल और नाशवान संसार में जहाँ चारों ओर दुःख ही दुःख है। वह कौन-सा कर्म है जिसे करने से मनुष्य की दुर्गति न हो, दुःख न हो?

–मुनि का स्वर इतना भावपूर्ण था कि सभी चोर तन्मय होकर सुनने ही नहीं लगे, मस्त होकर साथ-साथ ताल-लयपूर्वक गाने-नाचने भी लग गये।

–कपिल मुनि का यह अध्यात्म उपदेश सुनकर चोरों ने चोरी कर्म तो छोड़ा ही, अपने धन, परिवार आदि को त्यागकर कपिल मुनि के शिष्य बन गये और संसार को तृष्णा से मुक्ति पाने का सच्चा मार्ग बताने लग गये।

–कपिल मुनि छह मास तक साधना, तपस्या करने के पश्चात् केवली बन गये। उनके द्वारा चोरों को दिया गया वह उपदेश उत्तराध्ययनसूत्र ८ में संगृहीत है, जिसे आज भी पढ़-सुनकर वैराग्य का उदय होता है।

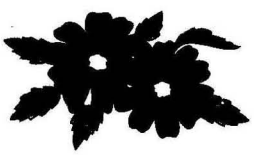

समाप्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर के प्रकाशनों की सूची

क्रमांक	कृति नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
1.	कल्पसूत्र सचित्र	सं. म. विनयसागर	200.00
2.	राजस्थान का जैन साहित्य	सं. म. विनयसागर	50.00
3.	प्राकृत स्वयं शिक्षक	डॉ. प्रेमसुमन जैन	15.00
4.	आगम तीर्थ	डॉ. हरिराम आचार्य	10.00
5.	स्मरण कला	अ. मोहन मुनि	15.00
6.	जैनागम दिग्दर्शन	डॉ. मुनि नगराज	20.00
7.	जैन कहानियाँ	उ. महेन्द्र मुनि	4.00
8.	जाति स्मरण ज्ञान	उ. महेन्द्र मुनि	3.00
9.	Half a Tale	Dr. Mukund Lath	150.00
10.	गणधरवाद	म. विनयसागर	50.00
11.	Jain Inscriptions of Rajasthan	Ramvallabh Somani	70.00
12.	Basic Mathematics	Prof. L. C. Jain	15.00
13.	प्राकृत काव्य मंजरी	डॉ. प्रेमसुमन जैन	16.00
14.	महावीर का जीवन सन्देश	काका कालेलकर	20.00
15.	Jain Political Thought	Dr. G. C. Pandey	40.00
16.	Studies of Jainism	Dr. T. G. Kalghatgi	100.00
17.	जैन, बौद्ध और गीता का साधना मार्ग	डॉ. सागरमल जैन	20.00
18.	जैन, बौद्ध और गीता का समाज दर्शन	डॉ. सागरमल जैन	16.00
19-20.	जैन, बौद्ध और गीता के आचार दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. सागरमल जैन	140.00
21.	जैन कर्म-सिद्धान्त का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. सागरमल जैन	14.00
22.	हेम-प्राकृत व्याकरण शिक्षक	डॉ. उदयचन्द जैन	16.00
23.	आचारांग चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	25.00
24.	वाक्पतिराज की लोकानुभूति	डॉ. के. सी. सोगानी	12.00
25.	प्राकृत गद्य सोपान	डॉ. प्रेमसुमन जैन	16.00
26.	अपभ्रंश और हिन्दी	डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन	30.00
27.	नीलांजना	गणेश ललवानी	12.00
28.	चन्दनमूर्ति	गणेश ललवानी	20.00
29.	Astronomy and Cosmology	Prof. L. C. Jain	15.00
30.	Not Far From The River	David Ray	50.00
31-32.	उपमिति-भव-प्रपंच कथा	सं. म. विनयसागर	300.00
33.	समणसुत्तं चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	30.00
34.	मिले मन भीतर भगवान	विजयकलापूर्ण सूरि	30.00
35.	जैन धर्म और दर्शन	गणेश ललवानी	9.00
36.	Jainism	D. D. Malvania	30.00
37.	दशवैकालिक चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	25.00
38.	Rasaratna Samucchaya	Dr. J. C. Sikdar	15.00
39.	नीतिवाक्यामृत (English also)	डॉ. एस. के. गुप्ता	100.00
40.	सामायिक धर्म : एक पूर्ण योग	विजयकलापूर्ण सूरि	10.00
41.	गौतमरास : एक परिशीलन	म. विनयसागर	15.00
42.	अष्टपाहुड चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	20.00
43.	Ahimsa	Surendra Bothara	30.00
44.	वज्जालग्ग में जीवन मूल्य	डॉ. के. सी. सोगानी	20.00
45.	गीता चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	30.00
46.	ऋषिभाषित सूत्र (English also)	सं. म. विनयसागर	100.00
47-48.	नाड़ी विज्ञान एवं नाड़ी प्रकाश	जे. सी. सिकदर	30.00
49.	ऋषिभाषित : एक अध्ययन	डॉ. सागरमल जैन	30.00
50.	उववाइय सुत्तं (English also)	अ. गणेश ललवानी	100.00
51.	उत्तराध्ययन चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	25.00
52.	समयसार चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	16.00
53.	परमात्मप्रकाश एवं योगसार चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	10.00
54.	Rishibhashit : A Study	Dr. Sagarmal Jain	30.00
55.	अर्हत् वन्दना	म. चन्द्रप्रभसागर	3.00
56.	राजस्थान में स्वामी विवेकानन्द, भाग 1	पं. झाबरमल शर्मा	75.00
57.	आनन्दघन चौबीसी	भंवरलाल नाहटा	30.00
58.	देवचन्द्र चौबीसी सानुवाद	अ. प्र. सज्जनश्री जी	60.00
59.	सर्वज्ञ कथित परम सामायिक धर्म	विजयकलापूर्ण सूरि	40.00
60.	दुःख-मुक्ति : सुख-प्राप्ति	कन्हैयालाल लोढा	30.00
61.	गाथा सप्तशती	अ. डॉ. हरिराम आचार्य	100.00
62.	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र, भाग 1	अ. गणेश ललवानी	100.00
63.	Yogashastra	Ed. Surendra Bothara	100.00
64.	जिनभक्ति	अ. भद्रंकरविजय गणि	30.00

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

65.	सहजानन्दघन चरियं	भंवरलाल नाहटा	20.00
66.	आगम युग का जैन दर्शन	पं. दलसुख मालवणिया	100.00
67.	खरतरगच्छ दीक्षा नन्दी सूची	भंवरलाल नाहटा, म. विनयसागर	50.00
68.	आयार सुत्तं	अ. म. चन्द्रप्रभसागर	40.00
69.	सूयगड सुत्तं	अ. म. ललितप्रभसागर	30.00
70.	प्राकृत धम्मपद (English also)	सं. डॉ. भागचन्द जैन	150.00
71.	नालाडियार (Tamil, English, Sanskrit, Hindi)	सं. म. विनयसागर	120.00
72.	नन्दीश्वर द्वीप पूजा	सं. म. विनयसागर	15.00
73.	पुनर्जन्म का सिद्धान्त	डॉ. एस. आर. व्यास	50.00
74.	समवाय सुत्तं	अ. म. चन्द्रप्रभसागर	100.00
75.	जैन पारिभाषिक शब्दकोश	म. चन्द्रप्रभसागर	10.00
76.	जैन साहित्य में श्रीकृष्ण चरित्र	म. राजेन्द्र मुनि शास्त्री	100.00
77.	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र, भाग 2	अ. गणेश ललवानी	60.00
78.	राजस्थान में स्वामी विवेकानन्द, भाग 2	पं. झाबरमल शर्मा	100.00
79.	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र, भाग 3	अ. गणेश ललवानी	100.00
80.	दादा दत्त गुरु कॉमिक्स	म. ललितप्रभसागर	5.00
81.	भक्तामर : एक दिव्य दृष्टि	डॉ. साध्वी दिव्यप्रभा	51.00
82.	दादागुरु भजनावली	सं. म. विनयसागर	150.00
83.	जिनदर्शन चौबीसी (सचित्र)	सं. म. विनयसागर	50.00
84.	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र, भाग 4	अ. गणेश ललवानी	80.00
85.	Saman Suttam, Part 1	Tr. Dr. K. C. Sogani	75.00
86.	Jainism in Andhra Pradesh	Dr. Jawaharlal Jain	450.00
87.	रहनेमि अध्ययन (English also)	सं. डॉ. बी. के. खडबडी	20.00
89.	उपमिति भव प्रपंच कथा (मूल)	सं. विमलबोधिविजय	200.00
90.	मध्य प्रदेश में जैन धर्म का विकास	डॉ. मधूलिका वाजपेयी	130.00
91.	उपाध्याय म. देवचन्द्र जीवन, साहित्य और विचार	म. ललितप्रभसागर	100.00
92.	बरसात की एक रात	गणेश ललवानी	45.00
93.	अरिहंत	डॉ. साध्वी दिव्यप्रभा	100.00
94.	योग प्रयोग अयोग	डॉ. साध्वी मुक्तिप्रभा	100.00
95.	प्रबन्ध कोश का ऐतिहासिक विवेचन	डॉ. प्रवेश भारद्वाज	100.00
96.	पंचदशी एकांकी संग्रह	गणेश ललवानी	100.00
97.	Jainism in India	Ed. Ganesh Lalwani	100.00
98.	ज्ञानसार सानुवाद (English also)	अ. गणि मणिप्रभसागर	80.00
99.	विज्ञान के आलोक में जीव-अजीव तत्त्व	सं. कन्हैयालाल लोढ़ा	40.00
100.	ज्योति कलश छलके	म. ललितप्रभसागर	40.00
101.	जैन कथा साहित्य : विविध रूपों में	डॉ. जगदीशचन्द्र जैन	100.00
102.	Neelkeshi	Ed. Prof. A Chakravarty	100.00
104.	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र, भाग 5	अ. गणेश ललवानी	120.00
105.	Jain Aachar : Siddhant Aur Swarup	A. Devendra Muni	300.00
106.	सकारात्मक अहिंसा	सं. कन्हैयालाल लोढ़ा	110.00
107.	द्रव्य विज्ञान	डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभा	80.00
108.	अस्तित्व का मूल्यांकन	डॉ. साध्वी मुक्तिप्रभा	100.00
109.	दिव्यद्रष्टा महावीर	डॉ. साध्वी दिव्यप्रभा	51.00
110.	जैनधर्म का यापनीय सम्प्रदाय	डॉ. सागरमल जैन	100.00
112.	श्री स्वर्णगिरि : जालोर	भंवरलाल नाहटा	60.00
113.	Philosophy and Spirituality of Shrimad Rajchandra	Dr. U. K. Pungalia	180.00
114.	कल्याण मन्दिर (यन्त्र विधान सहित)	डॉ. साध्वी मुक्तिप्रभा	100.00
115.	सचित्र भक्तामर स्तोत्र	श्रीचन्द सुराना 'सरस'	325.00
116.	Studies in Jainology Prakrit Literature and Languages	Dr. B. K. Khadabadi	300.00
117.	सचित्र पार्श्वकल्याण कल्पतरु	श्रीचन्द सुराना 'सरस'	30.00

प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर की चित्रकथाओं की प्रकाशन सूची

1. क्षमादान
2. भगवान ऋषभदेव (अप्राप्य)
3. णमोकार मंत्र के चमत्कार
4. चिन्तामणि पार्श्वनाथ
5. भगवान महावीर की बोध कथाएँ
6. बुद्धिनिधान अभयकुमार
7. शान्ति अवतार शान्तिनाथ (अप्राप्य)
8. किस्मत का धनी धन्ना
9-10. करुणानिधान भगवान महावीर
11. राजकुमारी चन्दनबाला
12. सती मदनरेखा (अप्राप्य)
13. सिद्धचक्र का चमत्कार (अप्राप्य)
14. मेघकुमार की आत्मकथा
15. युवायोगी जम्बूकुमार
16. राजकुमार श्रेणिक
17. भगवान मल्लीनाथ
18. सती अंजना सुन्दरी
20. भगवान नेमिनाथ
21. भाग्य का खेल
22. करकण्डू जाग गया
23. जगतगुरु श्री हीरविजय सूरि
24. वचन का तीर
25. अजातशत्रु कूणिक
26. पिंजरे का पंछी
27. धरती पर स्वर्ग
28. नन्द मणिकार
29. कर भला हो भला

(प्रत्येक पुस्तक का मूल्य : 17.00 रुपया मात्र) (पुस्तक क्रमांक 9-10 का मूल्य : 34.00 रुपया मात्र)

पुस्तक-प्राप्ति स्थान— **प्राकृत भारती अकादमी**

3826, मोतीसिंह भोमियो का रास्ता
जयपुर-302 003 (राज.) फोन : 561876

13-ए, कैलगिरि हॉस्पिटल रोड, मेन मालवीय नगर,
जयपुर-302 017 (राज.) फोन : 524827, 524828

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुर्व्यसनों को छोड़िए : दुःखों से छूटिए

आप और हम सब जानते हैं :

* बीड़ी, सिगरेट का एक कस हमारी जिन्दगी को पाँच मिनट कम कर देता है।

* शराब का एक घूँट हमारी नसों और फेंफड़ों को जलाकर कमजोर कर देता है।

* तम्बाकू, गुटका, पान-मसाला की एक-एक चुटकी हमारे शरीर में कैंसर जैसे महारोग का जाल बिछा देती है।

इन दुर्व्यसनों की लत के शिकार बनकर हम केवल अपनी जिन्दगी की बाज़ी ही नहीं हारते, अपितु अपने परिवार और प्यार भरे संसार को भी उजाड़ देते हैं। समाज और राष्ट्र के विकास में भी घुन लगा देते हैं।

तन की हानि, मन की हानि, जीवन की बर्बादी।
दुर्व्यसनों में बँधा हुआ तू, कैसी यह आजादी॥

* आपका हित चिन्तक, शाकाहार एवं व्यसन मुक्ति का पैरोकार

निवेदक :

शाकाहार एवं व्यसनमुक्ति कार्यक्रम के सूत्रधार-

रतनलाल सी, बाफना ज्वेलर्स

''नयनतारा'', सुभाष चौक, जलगांव-४२५ ००१

फोन : २३९०३, २५९०३, २७३२२, २७२६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैनधर्म के प्रसिद्ध विषयों पर आधारित रंगीन सचित्र कथाएं : दिवाकर चित्रकथा

जैनधर्म, संस्कृति, इतिहास और आचार-विचार से सीधा सम्पर्क बनाने का एक सरलतम, सहज माध्यम। मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक, संस्कार-शोधक, रोचक सचित्र कहानियाँ।

प्रसिद्ध कड़ियाँ

1. क्षमादान
2. भगवान ऋषभदेव
3. णमोकार मन्त्र के चमत्कार
4. चिन्तामणि पार्श्वनाथ
5. भगवान महावीर की बोध कथायें
6. बुद्धिनिधान अभयकुमार
7. शान्ति अवतार शान्तिनाथ
8. किस्मत का धनी धन्ना
9-10. करुणानिधान भ. महावीर
11. राजकुमारी चन्दनबाला
12. सती मदनरेखा
13. सिद्धचक्र का चमत्कार
14. मेघकुमार की आत्मकथा
15. युवायोगी जम्बूकुमार
16. राजकुमार श्रेणिक
17. भगवान मल्लीनाथ
18. महासती अंजनासुन्दरी
19. करनी का फल (ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती)
20. भगवान नेमिनाथ
21. भाग्य का खेल
22. करकण्डू जाग गया
23. जगत् गुरु हीरविजय सूरि
24. वचन का तीर
25. अजातशत्रु कूणिक
26. पिंजरे का पंछी
27. धरती पर स्वर्ग
28. नन्द मणिकार
29. कर भला हो भला
30. तृष्णा का फल
31. पाँच रत्न

55 पुस्तकों के सैट का मूल्य 900.00 रुपया। 33 पुस्तकों के सैट का मूल्य 540.00 रुपया।

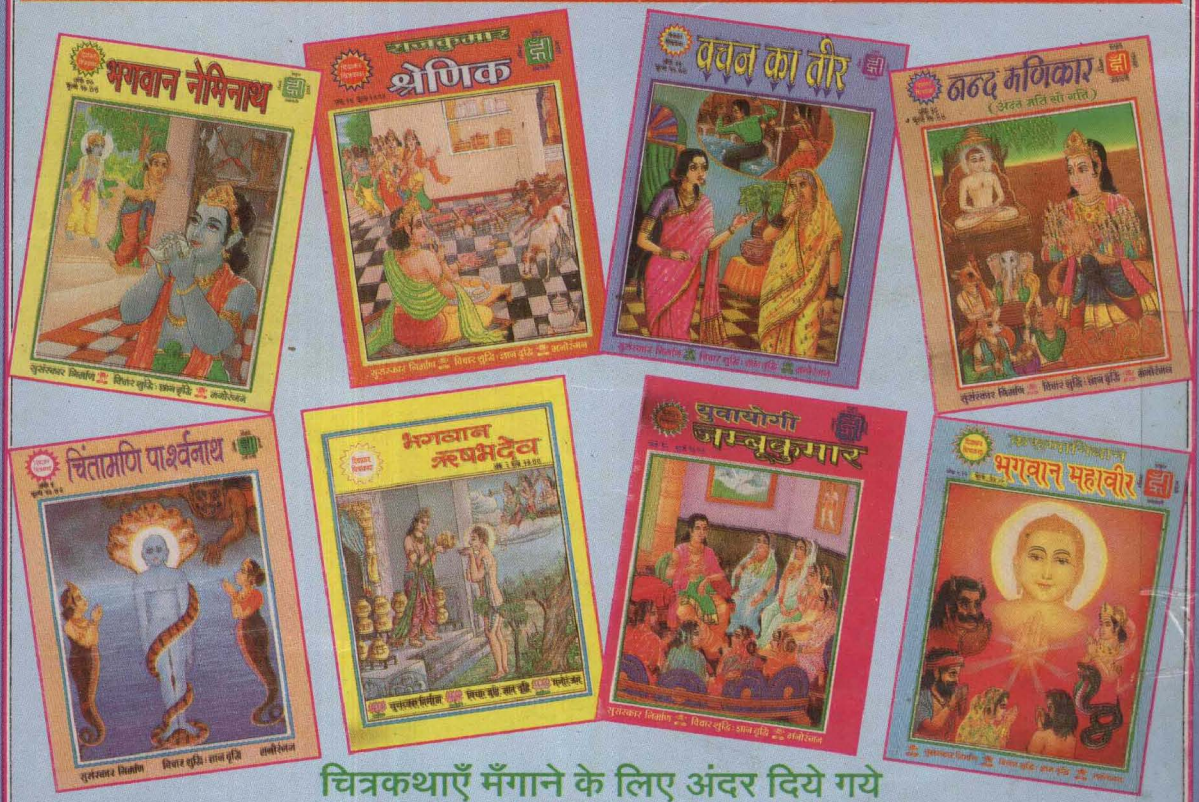

चित्रकथाएँ मँगाने के लिए अंदर दिये गये सदस्यता फॉर्म को भरकर भेजें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org